ललिता महात्रिपुरसुन्दरी

(सक्षिप्त परिचय एवं श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम्)

संकलन

डॉ यतेंद्र शर्मा

प्रकाशक

श्री राम कथा संस्थान पर्थ

ऑस्ट्रेलिआ – ६०२५

श्री राम कथा संस्थान पर्थ उद्देश्य

- श्री राम कथा संस्थान भगवान् स्वामी श्री रामानंद जी महाराज (१४वीं शताब्दी) की शिक्षाओं पर आधारित एक सनातन वैष्णव धार्मिक संस्था है।
- श्री संस्थान का सिद्धांत धर्म, जाति, लिंग एवं नैतिक पृष्ठभूमि के आधार पर भेदभाव रहित है। 'हरि को भजे सो हरि को होई' संस्थान का मूल मन्त्र है।
- श्री संस्थान का मानना है कि शुद्ध हृदय एवं निःस्वार्थ भाव भक्ति ईश्वर को अति प्रिय है। सभी प्रभु-भक्त एक दूसरे के भाई बहन हैं।
- ब्रह्म मनोभाव: भगवान् श्री राम, माता सीता एवं उनके विविध अवतार ही सर्वोच्च ब्रह्म हैं। वह सर्व-व्याप्त एवं विश्व के सरंक्षक हैं।
- आत्मा मनोभाव: आत्मा का अस्तित्व सर्वोच्च ब्रह्म के परमानंद पर निर्भर है। आत्मा को सर्वोच्च ब्रह्म ही निर्देशित एवं प्रबुद्ध करते हैं। श्री राम, माता सीता एवं उनके अवतार ही जीवन का अंतिम उद्देश्य मोक्ष दिलाने में समर्थ हैं।
- माया मनोभाव: माया प्रकृति के तीन गुण - सत, रज और तमस, के प्रभाव से प्राकट्य होती है। माया को सर्वोच्च ब्रह्म ही नियंत्रित करने में समर्थ हैं। सर्वोच्च ब्रह्म पर ध्यान केंद्र करने से माया का विनाश होता है, और जन्म-मृत्यु के चक्र से छुटकारा मिल मोक्ष की प्राप्ति होती है।
- श्री संस्थान इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निरंतर सनातन धार्मिक पत्रिकाएं, पुस्तकें, पुस्तिकाएं, काव्य ग्रन्थ आदि की रचनाएं एवं प्रकाशन करती है। साथ ही, समय समय पर श्री राम एवं अन्य धार्मिक कथाओं के संयोजन का भी प्रयास करती रहती है।

ललिता महात्रिपुरसुन्दरी
(सक्षिप्त परिचय एवं श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम्)

संकलन

डॉ यतेंद्र शर्मा

प्रकाशक

श्री राम कथा संस्थान पर्थ
३५ मायना रिट्रीट, हिलरीज़, पर्थ
ऑस्ट्रेलिआ – ६०२५

Website: https://shriramkatha.org
Email: srkperth@outlook.com

ललिता महात्रिपुरसुन्दरी - संक्षिप्त परिचय

हिंदू पौराणिक कथाओं (ब्रह्म-पुराण) में देवी त्रिपुरसुंदरी के उत्पत्ति का रहस्य विस्तारपूर्वक दिया गया है।

माँ सती ने प्रजापति दक्ष के यज्ञ में महादेव का भाग न देखकर योगाग्नि से अपना शरीर त्याग दिया था। सती वियोग के पश्चात भगवान शिव सर्वदा ध्यानमग्न रहते थे। उन्होंने अपने संपूर्ण कर्म का परित्याग कर दिया था, जिसके कारण तीनों लोकों के संचालन में व्याधि उत्पन्न हो रही थी। उधर तारकासुर ने ब्रह्मदेव की अत्यंत कठिन साधना कर ब्रह्मा जी से वर प्राप्त किया था कि उसकी मृत्यु शिव के पुत्र द्वारा ही होगी। वह एक प्रकार से अमर हो गया था। माँ सती के देह त्याग करने के पश्चात शिव जी संसार से विरक्त हो घोर ध्यान में चले गए थे तथा उनकी अर्धांग्नी न होने से पुत्र संभावना नहीं थी। तारकासुर ने तीनों लोकों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर समस्त देवताओं को प्रताड़ित कर स्वर्ग से निकाल दिया। वह समस्त भोगों को स्वयं ही भोगने लगा था।

इसी समय माँ सती ने हिमालय के गृह में माँ पार्वती के रूप में पुनर्जन्म लिया तथा नारद जी के आवाह्न पर भगवान शिव को पति रूप में पाने हेतु भगवान् शिव की कठोर साधना की।

सभी देवगण तारकासुर के अत्याचार से भयभीत हो अब चाहते थे कि भगवान् महादेव अपनी साधना से जागें और माँ पार्वती से विवाह करें ताकि उनके पुत्र इस असुर तारकासुर का वध कर सकें। देवताओं ने भगवान शिव को ध्यान से जगाने हेतु कामदेव को कैलाश भेजा। कामदेव ने कुसुम सर नमक मोहिनी वाण से भगवान शिव पर प्रहार किया। परिणामस्वरूप शिव जी का ध्यान भंग हो गया। भगवान् महादेव अपनी तपस्या के भंग होने से कामदेव पर अत्यंत क्रोधित हो गए। तब महादेव ने अपना तीसरा नेत्र खोल दिया। देखते ही देखते भगवान शिव के तीसरे नेत्र से उत्पन्न क्रोध-अग्नि ने कामदेव को जला कर भस्म कर दिया। कामदेव की पत्नी रति द्वारा अत्यंत दारुण विलाप करने पर भगवान शिव ने तब कामदेव को पुनः द्वापर युग में भगवान कृष्ण के पुत्र रूप में जन्म धारण करने का वरदान दिया। सभी देवताओं तथा रति के जाने के पश्चात भगवान शिव के एक गण द्वारा कामदेव की भस्म से एक मूर्ति निर्मित की गई। उस निर्मित मूर्ति से एक पुरुष का प्राकट्य हुआ। उस प्राकट्य पुरुष ने भगवान शिव की अति

उत्तम स्तुति की। स्तुति से प्रसन्न हो भगवान शिव ने भण्ड (अच्छा)! भण्ड (अच्छा)! कहा। तदन्तर भगवान शिव द्वारा उस पुरुष का नाम भण्ड रखा गया तथा उसे ६० हजार वर्षों तक राज करने का वरदान दिया। चूँकि भण्ड की उत्पत्ति शिव के क्रोध द्वारा भाष्मित कामदेव की भस्म से हुई थी, अतः भण्ड पूर्ण रूप से तमोगुण सम्पन्न था। उसकी इस आसुरीय प्रकृति के कारण उसका नाम भण्डासुर पड़ गया।

भण्डासुर को महादेव द्वारा वरदान मिलने की बात कुछ ही क्षणों में सम्पूर्ण भुवनों में फैल गयी। दैत्य एवं दानव वंश के गुरु शुक्राचार्य यह समाचार पाकर भण्डासुर के पास सभी दैत्य एवं दानव वंश के समुदाय के साथ उससे मिलने आए। गुरु शुक्राचार्य ने दानव मय के द्वारा शोणितपुर को फिर से सुसज्जित कराकर वहाँ भण्डासुर का अभिषेक कर दिया।

प्रारम्भ में भण्डासुर शिव की अर्चना करता और उनके आदेश पर चलता था। उसके अनुयायी दैत्य वंश के अन्य सम्राट एवं प्रजा भी धर्म का अनुसरण करते थे। प्रत्येक घर वेदों की ध्वनि से गुंजित रहता था। घर घर में यज्ञ होता था। इस तरह सौभाग्यशाली भण्ड के सुख-समृद्धि के साठ हजार वर्ष देखते देखते बीत गये ।

भण्डासुर बाद में माया की चपेट में पड़ गया। अब चार पत्नियों से भी उसे संतोष न था। वह एक दिव्य वारांगना के मोह में पड़ गया। उसका अनुसरण करते हुए उसके मन्त्री आदि अनुयायी भी विलासी बनते चले गये। अब न किसी को भगवान् शंकर याद आते, न पूजा-पाठ ही। यज्ञ और वेद के उच्चारण भी अब बंद हो गये थे।

वह शनैः शनैः तीनों लोकों पर भयंकर उत्पात मचाने लगा। देवराज इंद्र के स्वर्ग समान ही भण्डासुर ने अपने राज्य का निर्माण किया तथा राज करने लगा। वह अपने राज्य की सीमाएं बढ़ाने के लालच में पड़ गया। तदन्तर भण्डासुर ने स्वर्ग लोक पर आक्रमण कर देवराज इन्द्र तथा स्वर्ग राज्य को चारों ओर से घेर लिया। भयभीत इंद्र ब्रह्मऋषि नारद की शरण में गए तथा इस समस्या के निवारण हेतु उपाय पूछा। ब्रह्मऋषि नारद ने आदि-शक्ति की यथा विधि आराधना करने का परामर्श दिया। तब देवराज इंद्र ने ब्रह्मऋषि नारद द्वारा बताये हुए साधना पथ का अनुसरण करते हुए देवी की आराधना प्रारम्भ की।

इधर गुरु शुक्राचार्य भण्डासुर के पास आये और उसे सावधान करते हुए उन्होंने कहा, 'हे भण्डासुर, देवता अपनी विजय के लिये हिमालय में आदि-शक्ति की उपासना कर रहे हैं। यदि आदि-शक्ति उनकी आराधना से प्रसन्न हो गईं तो तुम कहीं के न रह जाओगे। अत: तुम शीघ्र ही देवताओं की आराधना में विघ्न डालो।'

गुरु शुक्राचार्य के आदेश पर तब भण्डासुर ने दल-बल के साथ देवताओं पर चढ़ाई कर दी। आदि-शक्ति ने अपनी शरण में आये हुए देवताओं की रक्षा के लिये ज्योति की एक अलंघ्य दीवार खड़ी कर दी। भण्डासुर यह देखकर क्रोध से जल उठा। उसने दानवास्त्र चलाकर उसे तोड़ डाला। परंतु तत्क्षण ही वहाँ पुन: अलंघ्य दीवार खड़ी हो गयी। इस बार भण्डासुर ने वायव्यास्त्र से इसे तोड़ा। किंतु तत्क्षण भण्डासुर ने उसी दीवार को फिर से खड़ी देखा। दीवार तोड़ने में समय लगता था, किंतु खड़ी होने में समय नहीं लगता था। भण्डासुर ने अंततः अपनी हार स्वीकार कर ली और वह वापस अपनी राजधानी शोणितपुर लौट आया।

युद्ध से हारकर भण्डासुर लौट तो अवश्य गया था ,किंतु उसके भय से देवताओं की दशा दयनीय हो गयी थी। वे सोचते थे कि जिस दिन दीवार नहीं रहेगी उस दिन हम लोगों का भण्डासुर से बच सकना कठिन हो जायगा। अब कहीं छिपकर भी नहीं रहा जा सकता। अन्त में देवताओं ने निर्णय लिया कि या तो आदि-शक्ति दर्शन दें और हमारी रक्षा करें या यहीं भण्डासुर के हाथों से मारे जायें। उन्होंने अपनी आराधना और बढ़ा दी। हृदय की पुकार थी। आदि-शक्ति प्रकट हो गयीं। उनके अद्‌भुत दर्शन पाकर देवता कृतकृत्य हो गये। गद्गद होकर देवताओं ने माँ आदि-शक्ति की स्तुति की। ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी उस समय वहां आ गये।

आदि-शक्ति का स्वरूप, श्रृंगार देवी के रूप में था। ब्रह्मा ने उन्हें ललिता महा सुंदरी नाम से सम्बोधित किया। यह देवी तो माँ सती का ही स्वरुप हैं, यह विचारकर ब्रह्मा ने कि इनका विवाह परमात्मा शंकर से कराने का संकल्प किया। संकल्प करते ही सौन्दर्यसार के स्वरूप में भगवान् शंकर कुमार बनकर वहाँ प्रकट हो गये। यह देखकर सब देवगण आनन्द विभोर हो गये। ब्रह्मा ने तब उनका नाम कामेश्वर रख दिया। जब कामेश्वर आदि-शक्ति के सामने आए तब दोनों एक दूसरे को देखकर मुग्ध हो गये। ब्रह्मा ने उन दोनों का तब तुरंत विवाह करा दिया और आदि-शक्ति को उस पुर की अधीश्वरी बना दिया। शक्ति और शक्तिमान् का मेल हो जाने से वहाँ अखण्ड आनन्द की वृष्टि होने लगी। बहुत दिनों तक उत्साह के साथ विवाहोत्सव मनाया गया।

उधर भण्डासुर ने सारे विश्वको त्रस्त कर रखा था। उसने अहंकार में आकर अपने जनक श्री शंकर जी की भी घोर अवहेलना करना प्रारम्भ कर दिया था। विश्व की रक्षा के लिये भगवान् शिव शंकर के निर्देश पर तब देवी ललिताम्बा ने भण्डासुर के साथ युद्ध किया।

देवी ललिताम्बा के साथ युद्ध में भण्डासुर ने दैवीय अस्त्रों का प्रयोग किया। उस दुष्ट ने सर्व प्रथम 'पाषण्ड'नाम के दिव्य अस्त्र का का प्रयोग किया। तब पराम्बा ने उसका प्रत्युत्तर 'गायत्री' नाम के अस्त्र से दिया और उसके प्रभाव को निरस्त किया। जब भण्डासुर ने 'स्मृतिनाश' अस्त्र का प्रयोग किया, तब माँ ने 'धारणा' के अस्त्र के द्वारा उसे नष्ट किया। जब भण्डासुर ने 'यक्ष्मा' आदि रोगरूप अस्त्रोंका प्रयोग किया, तब पराम्बाने 'अच्युत, अनन्त, गोविन्द' (अच्युतानन्तगोविन्दनामोच्चारण भेषजात्) नाम रूप मन्त्रोंसे उसका निवारण किया। इसके बाद भण्डासुर ने हिरण्याक्ष, हिरण्यकशिपु, रावण, कंस और महिषासुर को उत्पन्न किया, तब ललिताम्बा ने अपनी दसों अंगुलियों के नख से वराह, नृसिंह, राम, कृष्ण, दुर्गा आदि को उत्पन्न किया। युद्ध के अन्तिम भाग में पराम्बा ने भण्डासुर का उद्धार 'कामेश्वर' अस्त्र से किया। माता ललिताम्बा के अस्त्र-शस्त्र इक्षु दण्ड और पुष्प थे। कामेश्वर का अस्त्र भी काम–बीजरूप प्रेमतत्त्व ही था।

इस तरह माँ ने भण्डासुर का वध कर देवराज इंद्र पर कृपा की तथा समस्त देवताओं को भय मुक्त किया।

माँ देवी ललिता जी का ध्यान रुप बहुत ही उज्ज्वल व प्रकाशमान है। ललिता देवी की पूजा से समृद्धि की प्राप्त होती है ।

माँ की पूजा तीन स्वरूपों में होती है:

१. बाल सुंदरी: ८ वर्षीया कन्या रूप में।

अरुणकिरण-जालै रञ्जितासावकाशा।
विधृतजप-वटीका पुस्तकाभीति-हस्ता॥
इतरकर-वराढ्या फुल्ल-कलार-संस्था।
निवसतु हृदि बाला नित्य कल्याणरूपा ॥

अर्थात: भगवती श्रीबाला-त्रिपुर-सुन्दरी के शरीर की आभा अरुणोदय काल के सूर्य-बिम्ब के जैसी रक्त-वर्ण की है। उस आभा की किरणों से सभी दिशाएँ एवं अन्तरिक्ष लाल रङ्ग से रँगे हुए हैं। चार कर-कमलों में जप-माला, पुस्तक, अभय और वर-मुद्राएँ हैं। पूर्ण खिले हुए रक्त कमल के पुष्प पर विराजमान हैं। ऐसी श्रीबाला जगत् का नित्य कल्याण करने वाली हैं। वे मेरे हदय में निवास करें।

2. षोडशी त्रिपुर सुंदरी: १६ वर्षीया सुंदरी।

सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत् तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम्।
पाणिभ्यामलिपूर्णलनचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं सौम्यां रत्नघटस्थरक्तचरणां ध्यायेत् परामम्बिकाम्।।

अर्थात: सिन्दूर के समान अरुण विग्रह वाली, तीन नेत्रों से सम्पन्न, माणिक्यजटित प्रकाशमान मुकुट तथा चन्द्रमा से सुशोभित मस्तकवाली, मुसकानयुक्त मुखमण्डल एवं स्थूल वक्षःस्थलवाली, अपने दोनों हाथों में से एक हाथ में मधु से परिपूर्ण रत्ननिर्मित मधूकलश तथा दूसरे हाथ में लाल कमल धारण करने वाली ओर रत्नमय घट पर अपना रक्त चरण रखकर सुशोभित होने वाली शान्तस्वभाव भगवती पराम्बिका का ध्यान करना चाहिये।

३. ललिता त्रिपुर सुंदरी: युवा स्वरूप।

ध्यायेत्पद्मासनस्थां पद्मपत्रायताक्षी वराङ्गीम्।
सर्वालङ्कारयुक्तां सततमभयदां भक्तनम्रां भवानी विकसितवदनां हेमाभां पीतवस्त्रां करकलितलसद्धेमपद्मां श्रीविद्यां शान्तमूर्ति सकलसुरनुतां सर्वसम्पत्प्रदात्रीम्॥

अर्थात: कमल के आसन पर विराजमान, प्रसन्न मुखमण्डल वाली, कमल-दल के सदृश विशाल नेत्रों वाली, स्वर्ण के समान आभा वाली, पीतवर्ण के वस्त्र धारण करने वाली, अपने कोमल हाथ में स्वर्णिम कमल धारण करने वाली, सुन्दर शरीरावायव से सुशोभित, सभी प्रकार के आभषणों से अलङ्कत. निरन्तर अभय प्रदान करने वाली, भक्तों के प्रति कोमल स्वभाव वाली, शान्त मूर्ति, सभी देवताओं

से नमस्कृत तथा सम्पूर्ण सम्पदा प्रदान करने वाली भवानी श्रीविद्या का ध्यान करना चाहिये।

माँ की दीक्षा और साधना भी इसी क्रम में की जाती है।

बृहन्नीला तंत्र के अनुसार काली के दो भेद कहे गए हैं - कृष्ण वर्ण और रक्त वर्ण। कृष्ण वर्ण काली दक्षिण कालिका स्वरुप है, और रक्त वर्ण त्रिपुर सुंदरी। माँ ललिता त्रिपुर सुंदरी रक्त काली स्वरूपा मानी जाती हैं।

महा विद्याओं में कोई स्वरुप भोग देने में प्रधान है तो कोई स्वरूप मोक्ष देने में, परंतु त्रिपुरसुंदरी अपने साधक को दोनों ही देती हैं।

शुक्ल पक्ष के समय प्रात: काल माता की पूजा उपासना की जाती है। कालिका-पुराण के अनुसार देवी की दो भुजाएं हैं जो गौर वर्ण की रक्तिम कमल पर विराजित हैं।

ये श्री यंत्र की मूल अधिष्ठात्री देवी हैं। श्री यंत्र को पंचामृत से स्नान करवा कर यथोचित पूजन और ललिता सहस्त्रनाम, ललिता त्रिशति ललितोपाख्यान और श्री सूक्त का पाठ करने से सांसारिक और आध्यात्मिक दोनों ही लाभ होते हैं ।

ध्यान

बालार्क युत तैजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लसिनीं ।
नानालंकृतिराजमानवपुषं बालोडुराट शेखराम् ।
हस्तैरिक्षु धनुः सृणि सुमशरं पाशं मुदा विभ्रतीं ।
श्री चक्र स्थितःसुन्दरीं त्रिजगतधारभूतां भजे ।

ललिता सहस्त्रनाम ब्रह्माण्ड-पुराण का अंश है। ब्रह्माण्ड-पुराण में इसका शीर्षक 'ललितोपाख्यान' के रूप में है। ब्रह्माण्ड-पुराण के उत्तर खण्ड में भगवान हयग्रीव और महामुनि अगस्त्य के संवाद के रूप में इसका विवेचन मिलता है। ये अनेक नामों से संबोधित की जाती हैं, जैसे - परमज्योति, परमधाम, परात्परा, सर्वान्तर्यामिनी, मूलविग्रहा, कल्पनारहिता, त्रयी, तत्त्वमयी, विश्वमाता, व्योमकेशी, शाश्वती, त्रिपुरा, ज्ञानमुद्रा, ज्ञानगम्या, चक्रराजनिलया, शिवा,

शिवशक्त्यैक्यरूपिणी, इत्यादि। अन्य नामों जैसे छान्द्र, कठ, जाबाल, केन, ईश, देवी, भावना आदि से भी उपनिषदों में भी संबोधित किया गया है।

श्री ललिता सहस्रनाम का पाठ समस्त बाधाओं को दूर कर आर्थिक, भौतिक एवं आध्यात्मिक सफलता प्रदान करता है।

ललिता सहस्रनाम में हम देवी माँ के एक सहस्त्र नाम जपते हैं। प्रत्येक नाम का एक अपना महत्त्व होता है। सहस्रनाम में देवी के प्रत्येक नाम से देवी का कोई गुण या विशेषता बताई गई है।

हमारे जीवन के विभिन्न पड़ावों में, जैसे बालपन से किशोरावस्था, किशोरावस्था से युवावस्था और युवावस्था से वृद्धावस्था, में हमारी आवश्यकताएं और इच्छाएं बदलती रहती हैं। इस सब के साथ हमारी चेतना की अवस्था में भी महत्वपूर्ण बदलाव होते हैं। जब हम देवी के प्रत्येक नाम का जप करते हैं, तब वे गुण हमारी चेतना में जागृत होते हैं और जीवन में आवश्यक्तानुसार प्रकट होते हैं।

देवी माँ के नाम के जप से हम अपने अंदर विभिन्न गुणों को जागृत करके उन गुणों को अपने चारों ओर के संसार में प्रकट होते देख और समझ पाने की शक्ति भी पाते हैं। हम सभी अपने प्राचीन ऋषियों के आभारी हैं जिन्होंने दिव्यता का आराधन उसके संपूर्ण वैविध्य गुणों के साथ किया। हमारे लिए जीवन को पूर्णता से जीने का मार्ग प्रशस्त किया। सहस्रनाम का जप अपने में ही एक पूजा विधि है। ये मन को शुद्ध करके चेतना का उत्थान करता है। इस जप से हमारा चंचल मन शांत होता है। भले ही आधे घंटे के लिए ही सही, मन ईश्वर से एक रूप और उनके गुणों के प्रति एकाग्र होता है, और भटकना रुक जाता है। ये विश्राम का सामान्य रूप है।

ललितासहस्रनाम में भाषा का सौंदर्य अद्भुत है। भाषा बहुत मोहक है और सामान्य और गहरे अर्थ दोनों ही चित्ताकर्षक हैं। उदाहरण के लिए कमलनयन का अर्थ सुन्दर और पवित्र दृष्टि है। कमल कीचड़ में खिलता है, फिर भी यह सुन्दर और पवित्र रहता है। कमलनयन व्यक्ति इस संसार में रहता है और सभी परिस्थितियों में इसकी सुंदरता और पवित्रता को देखता है।

'ललिता' पाठक को सहस्रनाम में वर्णित विभिन्न गुणों से पहचान कराकर उनके दोनों प्रकार के (गूढ़ और सामान्य) अर्थों की झलक भी देने के उद्देश्य को पूरा करती है। 'ललिता' में विशिष्ट गुण के विभिन्न सन्दर्भ को बहुत सुंदर तरीके से पिरोया गया है, जो साथ ही एक ही गुण के विभिन्न आयाम प्रस्तुत कर देती है। जब श्रद्धा और जाग्रति के साथ पाठ किया जाता है, तब 'ललिता' हमारी चेतना में शुद्धि लाकर हमें सकारात्मक, क्रियाशीलता और उल्लास का भंडार बना देती है। इसलिए आइये, आनंदमय हों, और संसार के लिए उल्लास रूप हो जाएं।

श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रम्

॥श्रीललितादेव्यै नमः॥

अस्य श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य वशिन्यादिवाग्देवता ऋषयः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीललिताम्बा देवता, प्रथमकूटं बीजम्, तृतीयकूटं शक्तिः, द्वितीयकूटं कीलकम् श्रीललिताम्बाप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः॥ कूटत्रयेण षडङ्गन्यासः॥

ध्यानम्

सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत् तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम्।

पाणिभ्यामलिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं विभ्रतीं सौम्यां रत्नघटस्थरक्तचरणां ध्यायेत् परामम्बिकाम्॥

भावार्थ : सिन्दूरके समान अरुण विग्रहवाली, तीन नेत्रोंसे सम्पन्न, माणिक्यजटित प्रकाशमान मुकुट तथा चन्द्रमासे सुशोभित मस्तकवाली, मुस्कानयुक्त मुखमण्डल एवं स्थूल वक्षःस्थलवाली, अपने दोनों हाथोंमेंसे एक हाथमें मधुसे परिपूर्ण रत्ननिर्मित मधुकलश तथा दूसरे हाथमें लाल कमल धारण करनेवाली और रत्नमय घटपर अपना रक्त चरण रखकर सुशोभित होनेवाली शान्तस्वभाव भगवती पराम्बिकाका ध्यान करना चाहिये।॥

हयग्रीव उवाच

श्रीमाता श्रीमहाराज्ञी श्रीमत्सिंहासनेश्वरी।
चिदग्निकुण्डसम्भूता देवकार्यसमुद्यता॥१॥

उद्यद्भानुसहस्त्राभा चतुर्बाहुसमन्विता।
रागस्वरूपपाशाढ्या क्रोधाकाराङ्कुशोज्ज्वला॥२॥

मनोरूपेक्षुकोदण्डा श्चतन्मात्रसायका।
निजारुणप्रभापूरमज्जद्ब्रह्माण्डमण्डला॥३॥

चम्पकाशोकपुन्नागसौगन्धिकलसत्कचा।
कुरुविन्दमणिश्रेणीकनत्कोटीरमण्डिता॥४॥

अष्टमीचन्द्रविभ्राजदलिकस्थलशोभिता।
मुखचन्द्रकलङ्काभमृगनाभिविशेषिका॥५॥

वदनस्मरमाङ्गल्यगृहतोरणचिल्लिका।
वक्त्रलक्ष्मीपरीवाहचलन्मीनाभलोचना॥६॥

नवचम्पकपुष्पाभनासादण्डविराजिता।
ताराकान्तितिरस्कारिनासाभरणभासुरा॥७॥

कदम्बमञ्जरीक्लृप्तकर्णपूरमनोहरा।
ताटङ्कयुगलीभूततपनोडुपमण्डला॥८॥

पद्मरागशिलादर्शपरिभाविकपोलभूः।
नवविद्रुमबिम्बश्रीन्यक्कारिदशनच्छदा॥९॥

शुद्धविद्याङ्कुराकारद्विजपंक्तिद्वयोज्ज्वला।
कर्पूरवीटिकामोदसमाकर्षिदिगन्तरा॥१०॥

निजसंलापमाधुर्यविनिर्भर्त्सितकच्छपी।
मन्दस्मितप्रभापूरमज्जत्कामेशमानसा॥११॥

अनाकलितसादृश्यचिबुकश्रीविराजिता।
कामेशबद्धमाङ्गल्यसूत्रशोभितकन्धरा॥१२॥

कनकाङ्गदकेयूरकमनीयभुजान्विता।
रत्नग्रैवेयचिन्ताकलोलमुक्ताफलान्विता॥१३॥

कामेश्वरप्रेमरत्नमणिप्रतिपणस्तनी।
नाभ्यालवालरोमालिलताफलकुचद्वयी॥१४॥

लक्ष्यरोमलताधारतासमुन्नेयमध्यमा।
स्तनभारदलन्मध्यपट्टबन्धवलित्रया॥१५॥

अरुणारुणकौसुम्भवस्त्रभास्वत्कटीतटी।
रत्नकिङ्किणिकारम्यरशनादामभूषिता॥१६॥

कामेशज्ञातसौभाग्यमार्दवोरुद्वयान्विता।
माणिक्यमुकुटाकारजानुद्वयविराजिता॥१७॥

इन्द्रगोपपरिक्षिप्तस्मरतूणाभजङ्घिका।
गूढगुल्फा कूर्मपृष्ठजयिष्णुप्रपदान्विता॥१८॥

नखदीधितिसञ्छन्ननमज्जनतमोगुणा।
पदद्वयप्रभाजालपराकृतसरोरुहा॥१९॥

शिञ्जानमणिमञ्जीरमण्डितश्रीपदाम्बुजा।
मरालीमन्दगमना महालावण्यशेवधिः॥२०॥

सर्वारुणाऽनवद्याङ्गी सर्वाभरणभूषिता।
शिवकामेश्वराङ्कस्था शिवा स्वाधीनवल्लभा॥२१॥

सुमेरुशृङ्गमध्यस्था श्रीमन्नगरनायिका।
चिन्तामणिगृहान्तःस्था पञ्चब्रह्मासनस्थिता॥२२॥

महापद्माटवीसंस्था कदम्बवनवासिनी।
सुधासागरमध्यस्था कामाक्षी कामदायिनी॥२३॥

देवर्षिगणसङ्घातस्तूयमानात्मवैभवा।
भण्डासुरवधोद्युक्तशक्तिसेनासमन्विता॥२४॥

सम्पत्करीसमारूढसिन्धुरव्रजसेविता।
अश्वारूढाधिष्ठिताश्वकोटिकोटिभिरावृता॥२५॥

चक्रराजरथारूढसर्वायुधपरिष्कृता।
गेयचक्ररथारूढमन्त्रिणीपरिसेविता॥२६॥

किरिचक्ररथारूढदण्डनाथपुरस्कृता।
ज्वालामालिनिकाक्षिप्तवह्निप्राकारमध्यगा॥२७॥

भण्डसैन्यवधोद्युक्तशक्तिविक्रमहर्षिता।
नित्यापराक्रमाटोपनिरीक्षणसमुत्सुका॥२८॥

भण्डपुत्रवधोद्युक्तबालाविक्रमनन्दिता।
मन्त्रिण्यम्बाविरचितविशुक्रवधतोषिता॥२९॥

विषङ्गःप्राणहरणवाराहीवीर्यनन्दिता।
कामेश्वरमुखालोककल्पितश्रीगणेश्वरा॥३०॥

महागणेशनिर्भिन्नविघ्नयन्त्रप्रहर्षिता।
भण्डासुरेन्द्रनिर्मुक्तशस्त्रप्रत्यस्त्रवर्षिणी॥३१॥

कराङ्गुलिनखोत्पन्नानारायणदशाकृतिः।
महापाशुपतास्त्राग्निनिर्दग्धासुरसैनिका॥३२॥

कामेश्वरास्त्रनिर्दग्धसभण्डासुरशून्यका।
ब्रह्मोपेन्द्रमहेन्द्रादिदेवसंस्तुतवैभवा॥३३॥

हरनेत्राग्निसन्दग्धकामसञ्जीवनौषधिः।
श्रीमद्वाग्भवकूटैकस्वरूपमुखपङ्कजा॥३४॥

कण्ठाधःकटिपर्यन्तमध्यकूटस्वरूपिणी।
शक्तिकूटैकतापन्नकट्यधोभागधारिणी॥३५॥

मूलमन्त्रात्मिका मूलकूटत्रयकलेवरा।
कुलामृतैकरसिका कुलसङ्केतपालिनी॥३६॥

कुलाङ्गना कुलान्तःस्था कौलिनी कुलयोगिनी।
अकुला समयान्तःस्था समयाचारतत्परा॥३७॥

मूलाधारैकनिलया ब्रह्मग्रन्थिविभेदिनी।
मणिपूरान्तरुदिता विष्णुग्रन्थिविभेदिनी॥३८॥

आज्ञाचक्रान्तरालस्था रुद्रग्रन्थिविभेदिनी।
सहस्त्राराम्बुजारूढा सुधासाराभिवर्षिणी॥३९॥

तडिल्लतासमरुचिः षट्चक्रोपरिसंस्थिता।
महाशक्तिः कुण्डलिनी बिसतन्तुतनीयसी॥४०॥

भवानी भावनागम्या भवारण्यकुठारिका।
भद्रप्रिया भद्रमूर्तिर्भक्तसौभाग्यदायिनी॥४१॥

भक्तप्रिया भक्तिगम्या भक्तिवश्या भयापहा।
शाम्भवी शारदाराध्या शर्वाणी शर्मदायिनी॥४२॥

शाङ्करी श्रीकरी साध्वी शरच्चन्द्रनिभानना।
शातोदरी शान्तिमती निराधारा निरञ्जना॥४३॥

निर्लेपा निर्मला नित्या निराकारा निराकुला।
निर्गुणा निष्कला शान्ता निष्कामा निरुपप्लवा॥४४॥

नित्यमुक्ता निर्विकारा निष्प्रपञ्चा निराश्रया।
नित्यशुद्धा नित्यबुद्धा निरवद्या निरन्तरा॥४५॥

निष्कारणा निष्कलङ्का निरुपाधिर्निरीश्वरा।
नीरागा रागमथनी निर्मदा मदनाशिनी॥४६॥

निश्चिन्ता निरहङ्कारा निर्मोहा मोहनाशिनी।
निर्ममा ममताहन्त्री निष्पापा पापनाशिनी॥४७॥

निष्क्रोधा क्रोधशमनी निर्लोभा लोभनाशिनी।
निःसंशया संशयघ्नी निर्भवा भवनाशिनी॥४८॥

निर्विकल्पा निराबाधा निर्भेदा भेदनाशिनी।
निर्नाशा मृत्युमथिनी निष्क्रिया निष्परिग्रहा॥४९॥

निस्तुला नीलचिकुरा निरपाया निरत्यया।
दुर्लभा दुर्गमा दुर्गा दुःखहन्त्री सुखप्रदा॥५०॥

दुष्टदूरा दुराचारशमनी दोषवर्जिता।
सर्वज्ञा सान्द्रकरुणा समानाधिकवर्जिता॥५१॥

सर्वशक्तिमयी सर्वमङ्गला सद्गतिप्रदा।
सर्वेश्वरी सर्वमयी सर्वमन्त्रस्वरूपिणी॥५२॥

सर्वयन्त्रात्मिका सर्वतन्त्ररूपा मनोन्मनी।
माहेश्वरी महादेवी महालक्ष्मीर्मृडप्रिया॥५३॥

महारूपा महापूज्या महापातकनाशिनी।
महामाया महासत्त्वा महाशक्तिर्महारतिः॥५४॥

महाभोगा महैश्वर्या महावीर्या महाबला।
महाबुद्धिर्महासिद्धिर्महायोगेश्वरेश्वरी॥५५॥

महातन्त्रा महामन्त्रा महायन्त्रा महासना।
महायागक्रमाराध्या महाभैरवपूजिता॥५६॥

महेश्वरमहाकल्पमहाताण्डवसाक्षिणी।
महाकामेशमहिषी महात्रिपुरसुन्दरी॥५७॥

चतुःषष्ट्युपचाराढ्या चतुःषष्टिकलामयी।
महाचतुःषष्टिकोटियोगिनीगणसेविता॥५८॥

मनुविद्या चन्द्रविद्या चन्द्रमण्डलमध्यगा।
चारुरूपा चारुहासा चारुचन्द्रकलाधरा॥५९॥

चराचरजगन्नाथा चक्रराजनिकेतना।
पार्वती पद्मनयना पद्मरागसमप्रभा॥६०॥

पञ्चप्रेतासनासीना पञ्चब्रह्मस्वरूपिणी।
चिन्मयी परमानन्दा विज्ञानघनरूपिणी॥६१॥

ध्यानध्यातृध्येयरूपा धर्माधर्मविवर्जिता।
विश्वरूपा जागरिणी स्वपन्ती तैजसात्मिका॥६२॥

सुप्ता प्राज्ञात्मिका तुर्या सर्वावस्थाविवर्जिता।
सृष्टिकर्त्री ब्रह्मरूपा गोप्त्री गोविन्दरूपिणी॥६३॥

संहारिणी रुद्ररूपा तिरोधानकरीश्वरी।
सदाशिवाऽनुग्रहदा पञ्चकृत्यपरायणा॥६४॥

भानुमण्डलमध्यस्था भैरवी भगमालिनी।
पद्मासना भगवती पद्मनाभसहोदरी॥६५॥

उन्मेषनिमिषोत्पन्नविपन्नभुवनावली।
सहस्त्रशीर्षवदना सहस्त्राक्षी सहस्त्रपात्॥६६॥

आब्रह्मकीटजननी वर्णाश्रमविधायिनी।
निजाज्ञारूपनिगमा पुण्यापुण्यफलप्रदा॥६७॥

श्रुतिसीमन्तसिन्दूरीकृतपादाब्जधूलिका।
सकलागमसंदोहशुक्तिसम्पुटमौक्तिका॥६८॥

पुरुषार्थप्रदा पूर्णा भोगिनी भुवनेश्वरी।
अम्बिकाऽनादिनिधना हरिब्रह्मेन्द्रसेविता॥६९॥

नारायणी नादरूपा नामरूपविवर्जिता।
ह्रींकारी ह्रीमती हृद्या हेयोपादेयवर्जिता॥७०॥

राजराजार्चिता राज्ञी रम्या राजीवलोचना।
रञ्जनी रमणी रम्या रणत्किङ्किणिमेखला॥७१॥

रमा राकेन्दुवदना रतिरूपा रतिप्रिया।
रक्षाकरी राक्षसघ्नी रामा रमणलम्पटा॥७२॥

काम्या कामकलारूपा कदम्बकुसुमप्रिया।
कल्याणी जगतीकन्दा करुणारससागरा॥७३॥

कलावती कलालापा कान्ता कादम्बरीप्रिया।
वरदा वामनयना वारुणीमदविह्वला॥७४॥

विश्वाधिका वेदवेद्या विन्ध्याचलनिवासिनी।
विधात्री वेदजननी विष्णुमाया विलासिनी॥७५॥

क्षेत्रस्वरूपा क्षेत्रेशी क्षेत्रक्षेत्रज्ञपालिनी।
क्षयवृद्धिविनिर्मुक्ता क्षेत्रपालसमर्चिता॥७६॥

विजया विमला वन्द्या वन्दारुजनवत्सला।
वाग्वादिनी वामकेशी वह्निमण्डलवासिनी॥७७॥

भक्तिमत्कल्पलतिका पशुपाशविमोचिनी।
संहृताशेषपाषण्डा सदाचारप्रवर्तिका॥७८॥

तापत्रयाग्निसंतप्तसमाह्लादनचन्द्रिका।
तरुणी तापसाराध्या तनुमध्या तमोऽपहा॥७९॥

चितिस्तत्पदलक्ष्यार्था चिदेकरसरूपिणी।
स्वात्मानन्दलवीभूतब्रह्माद्यानन्दसंततिः॥८०॥

परा प्रत्यक्चितीरूपा पश्यन्ती परदेवता।
मध्यमा वैखरीरूपा भक्तमानसहंसिका॥८१॥

कामेश्वरप्राणनाडी कृतज्ञा कामपूजिता।
शृङ्गाररससम्पूर्णा जया जालन्धरस्थिता॥८२॥

ओड्याणपीठनिलया बिन्दुमण्डलवासिनी।
रहोयागक्रमाराध्या रहस्तर्पणतर्पिता॥८३॥

सद्यःप्रसादिनी विश्वसाक्षिणी साक्षिवर्जिता।
षडङ्गदेवतायुक्ता षाड्गुण्यपरिपूरिता॥८४॥

नित्यक्लिन्ना निरुपमा निर्वाणसुखदायिनी।
नित्याषोडशिकारूपा श्रीकण्ठार्धशरीरिणी॥८५॥

प्रभावती प्रभारूपा प्रसिद्धा परमेश्वरी।
मूलप्रकृतिरव्यक्ता व्यक्ताव्यक्तस्वरूपिणी॥८६॥

व्यापिनी विविधाकारा विद्याविद्यास्वरूपिणी।
महाकामेशनयनकुमुदाह्लादकौमुदी॥८७॥

भक्तहार्दतमोभेदभानुमद्भानुसंततिः।
शिवदूती शिवाराध्या शिवमूर्तिः शिवङ्करी॥८८॥

शिवप्रिया शिवपरा शिष्टेष्टा शिष्टपूजिता।
अप्रमेया स्वप्रकाशा मनोवाचामगोचरा॥८९॥

चिच्छक्तिश्चेतनारूपा जडशक्तिर्जडात्मिका।
गायत्री व्याहृतिः सन्ध्याद्विजवृन्दनिषेविता॥९०॥

तत्त्वासना तत्त्वमयी पञ्चकोशान्तरस्थिता।
निःसीममहिमा नित्ययौवना मदशालिनी॥९१॥

मदघूर्णितरक्ताक्षी मदपाटलगण्डभूः।
चन्दनद्रवदिग्धाङ्गी चाम्पेयकुसुमप्रिया॥९२॥

कुशला कोमलाकारा कुरुकुल्ला कुलेश्वरी।
कुलकुण्डालया कौलमार्गतत्परसेविता॥९३॥

कुमारगणनाथाम्बा तुष्टिः पुष्टिर्मतिर्धृतिः।
शान्तिः स्वस्तिमती कान्तिर्नन्दिनी विघ्ननाशिनी॥९४॥

तेजोवती त्रिनयना लोलाक्षी कामरूपिणी।
मालिनी हंसिनी माता मलयाचलवासिनी॥९५॥

सुमुखी नलिनी सुभ्रूः शोभना सुरनायिका।
कालकण्ठी कान्तिमती क्षोभिणी सूक्ष्मरूपिणी॥९६॥

वज्रेश्वरी वामदेवी वयोऽवस्थाविवर्जिता।
सिद्धेश्वरी सिद्धविद्या सिद्धमाता यशस्विनी॥९७॥

विशुद्धिचक्रनिलयाऽऽरक्तवर्णा त्रिलोचना।
खट्वाङ्गादिप्रहरणा वदनैकसमन्विता॥९८॥

पायसान्नप्रिया त्वक्स्था पशुलोकभयंकरी।
अमृतादिमहाशक्तिसंवृता डाकिनीश्वरी॥९९॥
अनाहताब्जनिलया श्यामाभा वदनद्वया।
दंष्ट्रोज्ज्वलाक्षमालादिधरा रुधिरसंस्थिता॥१००॥

कालरात्र्यादिशक्त्यौघवृता स्निग्धौदनप्रिया।
महावीरेन्द्रवरदा राकिण्यम्बास्वरूपिणी॥१०१॥

मणिपूराब्जनिलया वदनत्रयसंयुता।
वज्रादिकायुधोपेता डामर्यादिभिरावृता॥१०२॥

रक्तवर्णा मांसनिष्ठा गुडान्नप्रीतमानसा।
समस्तभक्तसुखदा लाकिन्यम्बास्वरूपिणी॥१०३॥

स्वाधिष्ठानाम्बुजगता चतुर्वक्त्रमनोहरा।
शूलाद्यायुधसम्पन्ना पीतवर्णातिगर्विता॥१०४॥

मेदोनिष्ठा मधुप्रीता बन्धिन्यादिसमन्विता।
दध्यन्नासक्तहृदया काकिनीरूपधारिणी॥१०५॥

मूलाधाराम्बुजारूढा पञ्चवक्त्राऽस्थिसंस्थिता।
अङ्कु शादिप्रहरणा वरदादिनिषेविता॥१०६॥

मुद्गौदनासक्तचित्ता साकिन्यम्बास्वरूपिणी।
आज्ञाचक्राब्जनिलया शुक्लवर्णा षडानना॥१०७॥

मज्जासंस्था हंसवती मुख्यशक्तिसमन्विता।
हरिद्रान्नैकरसिका हाकिनीरूपधारिणी॥१०८॥

सहस्त्रदलपद्मस्था सर्ववर्णोपशोभिता।
सर्वायुधधरा शुक्लसंस्थिता सर्वतोमुखी॥१०९॥

सर्वौदनप्रीतचित्ता याकिन्यम्बास्वरूपिणी।
स्वाहा स्वधा मतिर्मेधा श्रुतिस्मृतिरनुत्तमा॥११०॥

पुण्यकीर्तिः पुण्यलभ्या पुण्यश्रवणकीर्तना।
पुलोमजार्चिता बन्धमोचनी बर्बरालका॥१११॥

विमर्शरूपिणी विद्या वियदादिजगत्प्रसूः।
सर्वव्याधिप्रशमनी सर्वमृत्युनिवारिणी॥११२॥

अग्रगण्याऽचिन्त्यरूपा कलिकल्मषनाशिनी।
कात्यायनी कालहन्त्री कमलाक्षनिषेविता॥११३॥

ताम्बूलपूरितमुखी दाडिमीकुसुमप्रभा।
मृगाक्षी मोहिनी मुख्या मृडानी मित्ररूपिणी॥११४॥

नित्यतृप्ता भक्तनिधिर्नियन्त्री निखिलेश्वरी।
मैत्र्यादिवासनालभ्या महाप्रलयसाक्षिणी॥११५॥

पराशक्तिः परानिष्ठा प्रज्ञानघनरूपिणी।
माध्वीपानालसा मत्ता मातृकावर्णरूपिणी॥११६॥

महाकैलासनिलया मृणालमृदुदोर्लता।
महनीया दयामूर्तिर्महासाम्राज्यशालिनी॥११७॥

आत्मविद्या महाविद्या श्रीविद्या कामसेविता।
श्रीषोडशाक्षरीविद्या त्रिकूटा कामकोटिका॥११८॥

कटाक्षकिङ्करीभूतकमलाकोटिसेविता।
शिरःस्थिता चन्द्रनिभा भालस्थेन्द्रधनुःप्रभा॥११९॥

हृदयस्था रविप्रख्या त्रिकोणान्तरदीपिका।
दाक्षायणी दैत्यहन्त्री दक्षयज्ञविनाशिनी॥१२०॥

दरान्दोलितदीर्घाक्षी दरहासोज्ज्वलन्मुखी।
गुरुमूर्तिर्गुणनिधिर्गोमाता गुहजन्मभूः॥१२१॥

देवेशी दण्डनीतिस्था दहराकाशरूपिणी।
प्रतिपन्मुख्यराकान्ततिथिमण्डलपूजिता॥१२२॥

कलात्मिका कलानाथा काव्यालापविमोदिनी।
सचामररमावाणीसव्यदक्षिणसेविता॥१२३॥

आदिशक्तिरमेयात्मा परमा पावनाकृतिः।
अनेककोटिब्रह्माण्डजननी दिव्यविग्रहा॥१२४॥

क्लींकारी केवला गुह्या कैवल्यपददायिनी।
त्रिपुरा त्रिजगद्वन्द्या त्रिमूर्तिस्त्रिदशेश्वरी॥१२५॥

त्र्यक्षरी दिव्यगन्धाढ्या सिन्दूरतिलकाञ्चिता।
उमा शैलेन्द्रतनया गौरी गन्धर्वसेविता॥१२६॥

विश्वगर्भा स्वर्णगर्भा वरदा वागधीश्वरी।
ध्यानगम्याऽपरिच्छेद्या ज्ञानदा ज्ञानविग्रहा॥१२७॥

सर्ववेदान्तसंवेद्या सत्यानन्दस्वरूपिणी।
लोपामुद्रार्चिता लीलाक्लृप्तब्रह्माण्डमण्डला॥१२८॥

अदृश्या दृश्यरहिता विज्ञात्री वेद्यवर्जिता।
योगिनी योगदा योग्या योगानन्दा युगन्धरा॥१२९॥

इच्छाशक्तिज्ञानशक्तिक्रियाशक्तिस्वरूपिणी।
सर्वाधारा सुप्रतिष्ठा सदसद्रूपधारिणी॥१३०॥

अष्टमूर्तिरजाजैत्री लोकयात्राविधायिनी।
एकाकिनी भूमरूपा निर्द्वैता द्वैतवर्जिता॥१३१॥

अन्नदा वसुदा वृद्धा ब्रह्मात्मैक्यस्वरूपिणी।
बृहती ब्राह्मणी ब्राह्मी ब्रह्मानन्दा बलिप्रिया॥१३२॥

भाषारूपा बृहत्सेना भावाऽभावविवर्जिता।
सुखाराध्या शुभकरी शोभना सुलभा गतिः॥१३३॥

राजराजेश्वरी राज्यदायिनी राज्यवल्लभा।
राजत्कृपा राजपीठनिवेशितनिजाश्रिता॥१३४॥

राज्यलक्ष्मीः कोशनाथा चतुरङ्गबलेश्वरी।
साम्राज्यदायिनी सत्यसन्धा सागरमेखला॥१३५॥

दीक्षिता दैत्यशमनी सर्वलोकवशंकरी।
सर्वार्थदात्री सावित्री सच्चिदानन्दरूपिणी॥१३६॥

देशकालापरिच्छिन्ना सर्वगा सर्वमोहिनी।
सरस्वती शास्त्रमयी गुहाम्बा गुह्यरूपिणी॥१३७॥

सर्वोपाधिविनिर्मुक्ता सदाशिवपतिव्रता।
सम्प्रदायेश्वरी साध्वी गुरुमण्डलरूपिणी॥१३८॥

कुलोत्तीर्णा भगाराध्या माया मधुमती मही।
गणाम्बा गुह्यकाराध्या कोमलाङ्गी गुरुप्रिया॥१३९॥

स्वतन्त्रा सर्वतन्त्रेशी दक्षिणामूर्तिरूपिणी।
सनकादिसमाराध्या शिवज्ञानप्रदायिनी॥१४०॥

चित्कलानन्दकलिका प्रेमरूपा प्रियङ्करी।
नामपारायणप्रीता नन्दिविद्या नटेश्वरी॥१४१॥

मिथ्याजगदधिष्ठाना मुक्तिदा मुक्तिरूपिणी।
लास्यप्रिया लयकरी लज्जा रम्भादिवन्दिता॥१४२॥

भवदावसुधावृष्टिः पापारण्यदवानला।
दौर्भाग्यतूलवातूला जराध्वान्तरविप्रभा॥१४३॥

भाग्याब्धिचन्द्रिका भक्तचित्तकेकिघनाघना।
रोगपर्वतदम्भोलिर्मृत्युदारुकुठारिका॥१४४॥

महेश्वरी महाकाली महाग्रासा महाशना।
अपर्णा चण्डिका चण्डमुण्डासुरनिषूदनी॥१४५॥

क्षराक्षरात्मिका सर्वलोकेशी विश्वधारिणी।
त्रिवर्गदात्री सुभगा त्र्यम्बका त्रिगुणात्मिका॥१४६॥

स्वर्गापवर्गदा शुद्धा जपापुष्पनिभाकृतिः।
ओजोवती द्युतिधरा यज्ञरूपा प्रियव्रता॥१४७॥

दुराराध्या दुराधर्षा पाटलीकुसुमप्रिया।
महती मेरुनिलया मन्दारकुसुमप्रिया॥१४८॥

वीराराध्या विराड्रूपा विरजा विश्वतोमुखी।
प्रत्यग्रूपा पराकाशा प्राणदा प्राणरूपिणी॥१४९॥

मार्तण्डभैरवाराध्या मन्त्रिणीन्यस्तराज्यधूः।
त्रिपुरेशी जयत्सेना निस्त्रैगुण्या परापरा॥१५०॥

सत्यज्ञानानन्दरूपा सामरस्यपरायणा।
कपर्दिनी कलामाला कामधुक्कामरूपिणी॥१५१॥

कलानिधिः काव्यकला रसज्ञा रसशेवधिः।
पुष्टा पुरातना पूज्या पुष्करा पुष्करेक्षणा॥१५२॥

परंज्योतिः परंधाम परमाणुः परात्परा।
पाशहस्ता पाशहन्त्री परमन्त्रविभेदिनी॥१५३॥

मूर्तामूर्ता नित्यतृप्ता मुनिमानसहंसिका।
सत्यव्रता सत्यरूपा सर्वान्तर्यामिणी सती॥१५४॥

ब्रह्माणी ब्रह्मजननी बहुरूपा बुधार्चिता।
प्रसवित्री प्रचण्डाऽऽज्ञा प्रतिष्ठा प्रकटाकृतिः॥१५५॥

प्राणेश्वरी प्राणदात्री पञ्चाशत्पीठरूपिणी।
विशृङ्खला विविक्तस्था वीरमाता वियत्प्रसूः॥१५६॥

मुकुन्दा मुक्तिनिलया मूलविग्रहरूपिणी।
भावज्ञा भवरोगघ्नी भवचक्रप्रवर्तिनी॥१५७॥

छन्दःसारा शास्त्रसारा मन्त्रसारा तलोदरी।
उदारकीर्तिरुद्दामवैभवा वर्णरूपिणी॥१५८॥

जन्ममृत्युजरातप्तजनविश्रान्तिदायिनी।
सर्वोपनिषदुद्घुष्टा शान्त्यतीता कलात्मिका॥१५९॥

गम्भीरा गगनान्तःस्था गर्विता गानलोलुपा।
कल्पनारहिता काष्ठाकान्ता कान्तार्धविग्रहा॥१६०॥

कार्यकारणनिर्मुक्ता कामकेलितरङ्गिता।
कनत्कनकताटङ्का लीलाविग्रहधारिणी॥१६१॥

अजा क्षयविनिर्मुक्ता मुग्धा क्षिप्रप्रसादिनी।
अन्तर्मुखसमाराध्या बहिर्मुखसुदुर्लभा॥१६२॥

त्रयी त्रिवर्गनिलया त्रिस्था त्रिपुरमालिनी।
निरामया निरालम्बा स्वात्मारामा सुधास्तुतिः॥१६३॥

संसारपङ्कनिर्मग्नसमुद्धरणपण्डिता।
यज्ञप्रिया यज्ञकर्त्री यजमानस्वरूपिणी॥१६४॥

धर्माधारा धनाध्यक्षा धनधान्यविवर्धिनी।
विप्रप्रिया विप्ररूपा विश्वभ्रमणकारिणी॥१६५॥

विश्वग्रासा विद्रुमाभा वैष्णवी विष्णुरूपिणी।
अयोनिर्योनिनिलया कूटस्था कुलरूपिणी॥१६६॥

वीरगोष्ठीप्रिया वीरा नैष्कर्म्या नादरूपिणी।
विज्ञानकलना कल्या विदग्धा वैन्दवासना॥१६७॥

तत्त्वाधिका तत्त्वमयी तत्त्वमर्थस्वरूपिणी।
सामगानप्रिया सौम्या सदाशिवकुटुम्बिनी॥१६८॥

सव्यापसव्यमार्गस्था सर्वापद्विनिवारिणी।
स्वस्था स्वभावमधुरा धीरा धीरसमर्चिता॥१६९॥

चैतन्यार्घ्यसमाराध्या चैतन्यकुसुमप्रिया।
सदोदिता सदातुष्टा तरुणादित्यपाटला॥१७०॥

दक्षिणादक्षिणाराध्या दरस्मेरमुखाम्बुजा।
कौलिनीकेवलाऽनर्घ्यकैवल्यपददायिनी॥१७१॥

स्तोत्रप्रिया स्तुतिमती श्रुतिसंस्तुतवैभवा।
मनस्विनी मानवती महेशी मङ्गलाकृतिः॥१७२॥

विश्वमाता जगद्धात्री विशालाक्षी विरागिणी।
प्रगल्भा परमोदारा परामोदा मनोमयी॥१७३॥

व्योमकेशी विमानस्था वज्रिणी वामकेश्वरी।
पञ्चयज्ञप्रिया पञ्चप्रेतमञ्चाधिशायिनी॥१७४॥

पञ्चमी पञ्चभूतेशी पञ्चसंख्योपचारिणी।
शाश्वती शाश्वतैश्वर्या शर्मदा शम्भुमोहिनी॥१७५॥

धरा धरासुता धन्या धर्मिणी धर्मवर्धिनी।
लोकातीता गुणातीता सर्वातीता शमात्मिका॥१७६॥

बन्धूककुसुमप्रख्या बाला लीलाविनोदिनी।
सुमङ्गली सुखकरी सुवेषाढ्या सुवासिनी॥१७७॥

सुवासिन्यर्चनप्रीताऽऽशोभना शुद्धमानसा।
विन्दुतर्पणसंतुष्टा पूर्वजा त्रिपुराम्बिका॥१७८॥

दशमुद्रासमाराध्या त्रिपुराश्रीवशंकरी।
ज्ञानमुद्रा ज्ञानगम्या ज्ञानज्ञेयस्वरूपिणी॥१७९॥

योनिमुद्रा त्रिखण्डेशी त्रिगुणाम्बा त्रिकोणगा।
अनघाऽद्भुतचारित्रा वाञ्छितार्थप्रदायिनी॥१८०॥

अभ्यासातिशयज्ञाता षडध्वातीतरूपिणी।
अव्याजकरुणामूर्तिरज्ञानध्वान्तदीपिका॥१८१॥

आबालगोपविदिता सर्वानुल्लङ्घ्यशासना।
श्रीचक्रराजनिलया श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी॥१८२॥

श्रीशिवा शिवशक्त्यैक्यरूपिणी ललिताम्बिका ॐ॥

फलश्रुतिः

इत्येवं नामसाहस्त्रं कथितं ते घटोद्भव॥

रहस्यानां रहस्यं च ललिताप्रीतिदायकम्।
अनेन सदृशं स्तोत्रं न भूतं न भविष्यति॥

सर्वरोगप्रशमनं सर्वसम्पत्प्रवर्धनम्।
सर्वापमृत्युशमनं कालमृत्युनिवारणम्॥

सर्वज्वरार्तिशमनं दीर्घायुष्यप्रदायकम्।
पुत्रप्रदमपुत्राणां पुरुषार्थप्रदायकम्॥

इदं विशेषाच्छ्रीदेव्याः स्तोत्रं प्रीतिविधायकम्।
जपेन्नित्यं प्रयत्नेन ललितोपास्तितत्परः॥

रहस्यनामसाहस्त्रे नामैकमपि यः पठेत्।
तस्य पापानि नश्यन्ति महान्त्यपि न संशयः॥

नित्यकर्माननुष्ठानान्निषिद्धकरणादपि।
यत्पापं जायते पुंसां तत्सर्वं नश्यति द्रुतम्॥

भक्तो यः कीर्तयन् नित्यमिदं नामसहस्त्रकम्।
तस्मै श्रीललितादेवी प्रीताभीष्टं प्रयच्छति॥

यः पठेन्नामसाहस्त्रं षण्मासं भक्तिसंयुतम्।
लक्ष्मीश्चाञ्चल्यरहिता सदा तिष्ठति तद्गृहे॥

मासमेकं प्रतिदिनं त्रिवारं यः पठेन्नरः।
भारती तस्य जिह्वाग्रे रङ्गे नृत्यति नित्यशः॥

श्रीमन्त्रराजसदृशो यथा मन्त्रो न विद्यते।
देवता ललितातुल्या यथा नास्ति घटोद्भव॥

रहस्यनामसाहस्त्रतुल्या नास्ति तथा स्तुतिः।
लिखित्वा पुस्तके यस्तु नामसाहस्त्रमुत्तमम्॥

समर्चयेत् सदा भक्त्या तस्य तुष्यति सुन्दरी।
बहुनाऽत्र किमुक्तेन शृणु त्वं कुम्भसम्भव॥

नानेन सदृशं स्तोत्रं सर्वतन्त्रेषु विद्यते।
तस्मादुपासको नित्यं कीर्तयेदिदमादरात्॥

महानवम्यां यो भक्तः श्रीदेवीं चक्रमध्यगाम्।
अर्चयेन्नामसाहस्त्रैस्तस्य मुक्तिः करे स्थिता॥

यस्तु नामसहस्त्रेण शुक्रवारे समर्चयेत्।
चक्रराजे महादेवीं तस्य पुण्यफलं शृणु॥

सर्वान् कामानवाप्येह सर्वसौभाग्यसंयुतः।
पुत्रपौत्रादिसंयुक्तो भुक्त्वा भोगान् यथेप्सितान्॥

अन्ते श्रीललितादेव्याः सायुज्यमतिदुर्लभम्।
प्रार्थनीयं शिवाद्यैश्च प्राप्नोत्येव न संशयः॥

यः सहस्त्रं ब्राह्मणानामेभिर्नामसहस्त्रकैः।
समर्प्य भोजयेद् भक्त्या पायसापूपषड्सैः॥

तस्मै प्रीणाति ललिता स्वसाम्राज्यं प्रयच्छति।
न तस्य दुर्लभं वस्तु त्रिषु लोकेषु विद्यते॥

निष्कामः कीर्तयेद्यस्तु नामसाहस्त्रमुत्तमम्।
ब्रह्मज्ञानमवाप्नोति येन मुच्येत बन्धनात्॥

धनार्थी धनमाप्नोति यशोऽर्थी चाप्नुयाद्यशः।
विद्यार्थी चाप्नुयाद्विद्यां नामसाहस्त्रकीर्तनात्॥

नानेन सदृशं स्तोत्रं भोगमोक्षप्रदं मुने।
कीर्तनीयमिदं तस्माद् भोगमोक्षार्थिभिर्नरैः॥

॥इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे ललितोपाख्याने हयग्रीवागस्त्यसंवादे
श्रीललितासहस्त्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

श्रीललितापञ्चरत्नम्

प्रातः स्मरामि ललिता-वदनारविन्दं विम्बाधरं पृथुल-मौक्तिक-
शोभिनासम्।
आकर्णदीर्घनयनं मणिकुण्डलाढ्यं मन्दस्मितं मृगमदोज्ज्वलभालदेशम्॥१॥

प्रातःकाल ललितादेवी के उस मनोहर मुखकमल का स्मरण करता हूँ, जिनके बिम्बसमान रक्तवर्ण अधर, विशाल मौक्तिक(मोती के बुलाक) से सुशोभित नासिका और कर्णपर्यन्त फैले हुए विस्तीर्ण नयन हैं जो मणिमय कुण्डल और मन्द मुसकान से युक्त हैं तथा जिनका ललाट कस्तूरिकातिलक से सुशोभित है।

प्रातर्भजामि ललिताभुजकल्पवल्लीं रक्ताङ्गुलीय-लसदङ्गुलि-
पल्लवाढ्याम्।
माणिक्यहेम-वलयाङ्गद-शोभमानां पुण्ड्रेक्षुचाप-कुसुमेषु-
सृणीदधानाम्॥२॥

मैं श्रीललिता देवी की भुजारूपिणी कल्पलता का प्रातःकाल स्मरण करता हूँ जो लाल अंगूठी से सुशोभित सुकोमल अंगुलिरूप पल्लवों वाली तथा रत्नखचित सुवर्णकंकण और अंगदादि से भूषित है एवं जिन्होंने पुण्ड्र-ईख के धनुष, पुष्पमय बाण और अंकुश धारण किये हैं।

प्रातर्नमामि ललिताचरणारविन्दं भक्तेष्टदाननिरतं भवसिन्धुपोतम्।
पद्मासनादि-सुरनायकपूजनीयं पद्माङ्कुश-ध्वज-सुदर्शन-
लाञ्छनाढ्यम्॥३॥

मैं श्रीललितादेवी के चरणकमलों को, जो भक्तों को अभीष्ट फल देने वाले और संसारसागर के लिये सुदृढ़ जहाजरूप हैं तथा कमलासन श्रीब्रह्माजी आदि देवेश्वरों से पूजित और पद्म, अंकुश, ध्वज एवं सुदर्शनादि मंगलमय चिह्नों से युक्त हैं, प्रातःकाल नमस्कार करता हूँ।

प्रातः स्तुवे परशिवां ललितां भवानी त्रय्यन्त-वेद्यविभवां करुणानवद्याम्।
विश्वस्य सृष्टिविलयस्थिति-हेतुभूतां विद्येश्वरीं निगम-वाङ्मनसातिदूराम्॥४॥

मैं प्रातःकाल परमकल्याणरूपिणी श्रीललिता भवानी की स्तुति करता हूँ जिनका वैभव वेदान्तवेद्य है जो करुणामयी होने से शुद्धस्वरूपा हैं, विश्व की उत्पत्ति, स्थिति और लय की मुख्य हेतु हैं, विद्याकी अधिष्ठात्री देवी हैं तथा वेद, वाणी और मन की गति से अति दूर हैं।

प्रातर्वदामि ललिते तव पुण्यनाम कामेश्वरीति कमलेति महेश्वरीति।
श्रीशाम्भवीति जगतां जननी परेति वाग्देवतेति वचसा त्रिपुरेश्वरीति॥५॥

हे ललिते! मैं तेरे पुण्यनाम कामेश्वरी, कमला, महेश्वरी, शाम्भवी, जगज्जननी, परा, वाग्देवी तथा त्रिपुरेश्वरी आदि का प्रातःकाल अपनी वाणी द्वारा उच्चारण करता हूँ।

यः श्लोकपञ्चकमिदं ललिताम्बिकायाः सौभाग्यदं सुललितं पठति प्रभाते।
तस्मै ददाति ललिता झटिति प्रसन्ना विद्यां श्रियं विमल-
सौख्यमनन्तकीर्तिम्॥६॥

माता ललिता के अति सौभाग्यप्रद और सुललित इन पाँच श्लोकों को जो पुरुष प्रातःकाल पढ़ता है उसे शीघ्र ही प्रसन्न होकर ललितादेवी विद्या, धन, निर्मल सुख और अनन्त कीर्ति देती हैं।

॥श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतं श्रीललितापञ्चरत्नम् तत्सत्॥

भगवान् आदि शङ्कराचार्य ने सौन्दर्यलहरी में ललिताम्बा षोडशी श्रीविद्या की स्तुति करते हुए कहा है कि "अमृत के समुद्र में एक मणि का द्वीप है, जिसमें कल्पवृक्षों की बारी है, नवरत्नों के नौ परकोटे हैं उस वन में चिन्तामणि से निर्मित महल में ब्रह्ममय सिंहासन है जिसमें पञ्चकृत्य के देवता ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र और ईश्वर आसन के पाये हैं और सदाशिव फलक हैं। सदाशिव की नाभि से निर्गत कमल पर विराजमान भगवती षोडशी त्रिपुरसुन्दरी का जो ध्यान करते हैं वे धन्य हैं। भगवती ललिता के प्रभाव से उन्हें भोग और मोक्ष दोनों सहज ही उपलब्ध हो जाते हैं।"

जो षोडशी माता का आश्रय ग्रहण कर लेते हैं उनमें और ईश्वर में कोई भेद नहीं रह जाता है। वस्तुत: ललिताम्बा भगवती षोडशी की महिमा अवर्णनीय है। श्रीचक्रवासिनी षोडशी महाविद्या सर्वत्र व्याप्त हैं। संसार के समस्त मन्त्र-तन्त्र इनकी ही आराधना किया करते हैं। वेद भी इन महात्रिपुरसुन्दरी मां का वर्णन कर सकने में असमर्थ हैं। भक्तों को ललिता महाविद्या प्रसन्न होकर सब कुछ दे देती हैं अभीष्ट तो सीमित अर्थवाच्य है।

षोडशी त्रिपुर सुंदरी मंत्र

ह्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं।

श्री माँ महाविद्या

तिसृभ्यो मूर्तिभ्यः पुरातनत्वात् त्रिपुरा।

अर्थात्: जो ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश - इन तीनों से पुरातन हो वही त्रिपुरा हैं। 'त्रिपुरार्णव' ग्रन्थ में कहा गया है

नाडीत्रयं तु त्रिपुरा सुषुम्ना पिङ्गला विडा।
मनो बुद्धिस्तथा चित्तं पुरत्रयमुदाहृतम्। तत्र तत्र वसत्येषा तस्मात् तु त्रिपुरा मता।।

अर्थात्: 'सुषुम्ना, पिंगला और इडा – ये तीनों नाडियां हैं और मन, बुद्धि एवं चित्त – ये तीन पुर हैं। इनमें रहने के कारण इनका नाम त्रिपुरा है।

सोलह अक्षरों के मन्त्रवाली ललिता देवी की अङ्गकान्ति उदीयमान सूर्यमण्डल की आभा की भांति है। षोडशी माता की चार भुजाएं तीन नेत्र हैं। ये शान्तमुद्रा में लेटे हुए सदाशिव पर स्थित कमल के आसन पर आसीन हैं। भगवती षोडशी के चारों हाथों में क्रमशः पाश, अङ्कुश, धनुष और बाण सुशोभित हैं। वर देने के लिये सदा-सर्वदा तत्पर भगवती षोडशी का श्रीविग्रह सौम्य और हृदय दया से आपूरित है।

प्रशान्त हिरण्यगर्भ ही शिव हैं और उन्हीं की शक्ति षोडशी जी हैं। तन्त्रशास्त्रों में महाविद्या षोडशी देवी को पञ्चवक्त्रा अर्थात् पाँच मुखों वाली बताया गया है। चारों दिशाओं में चार मुख और एक ऊपर की ओर मुख होने से इन्हें पञ्चवक्त्रा कहा जाता है। देवी के पाँचों मुख तत्पुरुष, सद्योजात, वामदेव अघोर और ईशान शिव के पाँचों रूपों के प्रतीक हैं। पाँचों दिशाओं के रंग क्रमशः हरित, रक्त, धूम्र, नील और पीत होने से ये मुख भी इन्हीं रंगों के हैं । देवी षोडशी के दस हाथों में क्रमशः अभय, टंक, शूल, वज्र, पाश, खड्ग, अंकुश, घण्टा, नाग और अग्नि हैं। षोडश कलाएँ पूर्णरूप से विकसित होने के कारण ये महाविद्या षोडशी कहलाती हैं।

ललिता मां को आद्याशक्ति माना जाता है। अन्य विद्याएँ भोग या मोक्ष में से एक ही देती हैं परंतु भगवती महात्रिपुरसुंदरी ललिता महाविद्या अपने उपासक को भुक्ति और मुक्ति दोनों प्रदान करती हैं। इन आद्याशक्ति षोडशी महाविद्या के स्थूल, सूक्ष्म, पर तथा तुरीय चार रूप हैं।

एक बार पराम्बा पार्वतीजी ने भगवान् शिव से पूछा, 'भगवन् आपके द्वारा प्रकाशित तन्त्रशास्त्र की साधना से जीव के आधि-व्याधि, शोक-संताप, दीनता-हीनता तो दूर हो जायेंगे किन्तु गर्भवास और मरण के असह्य दुःख की निवृति तो इससे नहीं होगी। कृपा करके इस दुःख से निवृत्ति और मोक्षपद की प्राप्ति का कोई उपाय बताइये।'

परम कल्याणमयी पराम्बा के अनुरोध पर भगवान् शंकर ने षोडशी श्रीविद्यासाधना-प्रणाली को प्रकट किया। भगवान् शङ्कराचार्य ने भी श्रीविद्या के रूप में इन्हीं षोडशी देवी की उपासना की थी। इसीलिये आज भी सभी शाङ्कर पीठों में भगवती षोडशी राजराजेश्वरी त्रिपुरसुन्दरी की श्रीयन्त्र के रूप में आराधना करने की परम्परा चली आ रही है।

भैरवयामल तथा शक्तिलहरी में षोडशी मां की उपासना का विस्तृत परिचय मिलता है। दुर्वासा ऋषि श्रीविद्याके परमाराधक हुए हैं। षोडशी महाविद्या की उपासना श्रीचक्र में होती है। श्रीयन्त्र को यन्त्रराज की संज्ञा दी गई है इसमें दसों महाविद्याओं का अर्चन सम्पन्न हो जाता है। यदि पूजा के लिए कोई विग्रह उपलब्ध न हो तो मान्यता है कि शालग्राम, पारद शिवलिंग और श्रीयन्त्र इन तीनों में से कोई एक विग्रह भी उपलब्ध हो तो उसमें ही समस्त देवी-देवताओं की आराधना सम्पन्न की जा सकती है।

इस लोक में श्रीविद्या का सामान्य ज्ञान रखने वाले कुछ साधक तो सुलभ हैं परंतु विशेष ज्ञाता अत्यन्त दुर्लभ हैं। कारण, श्रीविद्या रहस्यमयी गुप्तविद्या है। इसका मंत्रोपदेश गुरु परम्परा द्वारा योग्य साधकों को ही दिया जाता है। भगवती की आराधना खाली दिखावे के लिये नहीं होनी चाहिये। उत्तम तो यही है कि जिनके पास पर्याप्त समय हो, विश्वास हो, श्रद्धा हो, जो नित्य इसका जप आदि कर सकने में सक्षम हों वे ही योग्य गुरु से श्रीविद्या के मन्त्र की दीक्षा लें और नित्य जपादि करें। हालांकि योग्य गुरु न मिलने पर आगमोक्त "मन्त्र ग्रहण विधि" का आश्रय लेकर भी साधक स्वयमेव दीक्षित हो सकता है परन्तु मार्गदर्शन तो गुरु ही करता

है। इस श्रीविद्या का प्रकाशन हर किसी के समक्ष नहीं करना चाहिये। सामान्य आराधकों को स्तोत्रों के पाठ से ही भगवती की आराधना करनी चाहिये।

रीविद्योपासक दुर्गुणों का सर्वथा त्याग करे, श्रीविद्या की आराधना में सुपात्र बनना अति आवश्यक है। गुणवानों की निरन्तर निन्दा करने वाले, आर्जवशून्य (जिसमें इंद्रियों का दासत्व, सीधेपन का अभाव हो,कुटिल), नित्य स्त्रीप्रसंग करने वाले, उद्दण्ड, मन-वाणी-कर्म से गुरूभक्तिहीनता आदि दोषों से युक्त व्यक्ति से श्रीविद्या की सदा रक्षा करनी चाहिये। 'षोडशिकार्णव' में कहा गया है, "नास्तिकों को, सुनने की अनिच्छा वालों को एवं अर्थ का अनर्थ ढाने वालों को यह विद्या कभी नहीं देनी चाहिये। अन्यथा उपदेष्टा गुरु शिष्य के पापों से लिप्त हो जाता है।"

ध्यान की महिमा मन्त्र जप से भी अधिक बतलाई गई है। आद्याशक्ति श्रीविद्या के ये तीन प्रकार के मुख्य स्वरूप हैं- श्री बाला त्रिपुरसुन्दरी, श्री षोडशी त्रिपुरसुन्दरी और श्री ललिता त्रिपुरसुन्दरी।

श्रीविद्या की विस्तृत पूजा के विधि-विधान बहुत समयसाध्य हैं, अतः खड्गमाला, अष्टोत्तरशत नाम, सहस्रनाम आदि स्तोत्रों के द्वारा भी श्री ललिता महाविद्या की आराधना की जाती है। तन्त्र ग्रन्थों में षोडशी महाविद्या के प्रातः स्मरण, शतनाम, सहस्रनाम, मानस पूजन, कवच, हृदय, खड्गमाला आदि बहुत से उत्तम स्तोत्र मिलते हैं जिनके माध्यम से भगवती षोडशी की स्तोत्रात्मक स्तुति उत्तम प्रकार से की जाती है। आद्य शंकराचार्य जी द्वारा रचित 'सौंदर्य लहरी' नामक स्तोत्र सौ श्लोकों का है।

श्रीविद्या के सामान्य आराधकों को भगवती के विविध स्तोत्रों का सहारा ले लेना चाहिये। धर्मग्रन्थों में भगवती महात्रिपुरसुन्दरी के विविध स्तोत्रों का विशाल संग्रह प्राप्त होता है। यहां भगवती ललिताम्बा का प्रातः स्मरण स्तोत्र प्रस्तुत है, शङ्कराचार्यजी के द्वारा रचित इस स्तोत्र को ललितापंचक स्तोत्र अथवा ललिता पञ्चरत्न स्तोत्र भी कहा जाता है।

डॉ यतेंद्र शर्मा

एक हिन्दू सनातन परिवार में जन्मे डॉ यतेंद्र शर्मा की रूचि बचपन से ही सनातन धर्म ग्रंथों का पठन पाठन एवं श्रवण में रही है। संस्कृत की प्रारम्भिक शिक्षा उन्होंने अपने पितामह श्री भगवान् दास जी एवं नरवर संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सालिग्राम अग्निहोत्री जी से प्राप्त की और पांच वर्ष की आयु में महर्षि पाणिनि रचित संस्कृत व्याकरण कौमुदी को कंठस्थ किया। उन्होंने तकनीकी विश्वविद्यालय ग्राज़ ऑस्ट्रिया से रसायन तकनीकी में पी.अच्.डी की उपाधि विशिष्टता के साथ प्राप्त की। सन १९८९ से डॉ यतेंद्र शर्मा अपने परिवार सहित पर्थ ऑस्ट्रेलिया में निवास कर रहें हैं, तथा पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के खनन उद्योग में कार्य रत हैं।

सन २०१६ में उन्होंने अपने कुछ धार्मिक मित्रों के साथ एक धार्मिक संस्था 'श्री राम कथा संस्थान पर्थ' की स्थापना की। यह संस्था श्री भगवान् स्वामी रामानंद जी महाराज (१४वीं- १५वीं शताब्दी) की शिक्षाओं से प्रभावित है, तथा समय समय पर गोस्वामी तुलसी दास जी रचित 'श्री राम चरित मानस' एवं अन्य धार्मिक कथाओं का प्रवचन, सनातन धर्म के महान संतों, महर्षियों, माताओं का चरित्र वर्णन एवं धार्मिक कथाओं के संकलन में अपना योगदान करने का प्रयास करती रहती है।